



ISSN 0975-8321

वाङ्मय

(त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका)

Peer Reviewed Journal
(Impact Factor 5.125)



साभार इण्टरनेट

आदिवासी : कथा आलोचना

सम्पादक : डॉ. एम. फ़ीरोज़ अहमद

ISSN 0975-8321

वाङ्मय त्रैमासिक

वर्ष : 17

संयुक्तांक, अप्रैल-सितम्बर 2021

सम्पादक

डॉ. एम. फीरोज़ अहमद

मोबाइल : 9044918670

सलाहकार सम्पादक

प्रो. मेराज अहमद

(ए.एम.यू. अलीगढ़)

परामर्श मण्डल

प्रो. रामकली सराफ (बी.एच.यू.)

डॉ. शगुफ़्ता नियाज़ (अलीगढ़)

डॉ. इकरार अहमद (दिबियापुर)

सम्पादकीय सम्पर्क

205- फेज-1, ओहद रेजीडेंसी,

नियर पान वाली कोठी,

दोदपुर रोड, सिविल लाइन, अलीगढ़-202002

मोबाइल : 7007606806

E-mail : vangmaya@gmail.com

इस अंक का मूल्य-250/-

सहयोग राशि :

एक प्रति : 80 रु., द्विवार्षिक शुल्क व्यक्तिगत/संस्थाओं के लिए : 700 रु.

आदिवासी जीवन का यथार्थ और उसकी भावपूर्ण अभिव्यक्ति/116

राम विनय शर्मा

आदिवासी जनजीवन से साक्षात्कार कराती कहानियाँ (संदर्भ-आदिवासी कथा जगत)/130

सुशील कुमार

हिंदी की प्रारंभिक आदिवासी कहानियाँ/138

डॉ. भावना मासीवाल

आदिवासी विमर्श का प्रस्थान बिंदु : हिंदी की आरम्भिक आदिवासी कहानियाँ/151

डॉ. नितिन सेठी

मोहभंग : आदिवासी जीवन का श्वेतपत्र/156

आनन्दप्रकाश त्रिपाठी

शोषण व्यवस्था में पिसता आदिवासी समाज और उससे उपजा 'मोहभंग'/168

हेमंत कुमार

वेदनाओं की अनंत कथा/179

डॉ. शिवचंद प्रसाद

जनजातीय समाज के खुरदुरे यथार्थ की कहानियाँ : गोड़पोछना/185

डॉ. शत्रुघ्न सिंह

भगोरिया की बाट में आदिवासी जीवन/193

डॉ. बृजबाला सिंह

भगोरिया की बाट : आदिम संस्कृति के विविध आयाम/203

फरीदा खातून

अनसुनी आवाजों का पुनर्सृजन : बाँस का किला/209

डॉ. विशाला शर्मा

जाने ये राहें अब ले जायेंगी कहाँ.../216

डॉ. अल्पना सिंह

राकेश कुमार सिंह की कहानियों में आदिवासी जीवन/222

डॉ. सियाराम

सांस्कृतिक इतिहास का आख्यान : रात बाकी और अन्य कहानियाँ/232

डॉ. अमित कुमार भारती

मोहभंग : आदिवासी जीवन का श्वेतपत्र

आनन्दप्रकाश त्रिपाठी

इस नयी सदी के आरंभिक दो दशक बीतने तक आदिवासी समाज, संस्कृति और इतिहास पर केंद्रित अनेक महत्त्वपूर्ण कथाकृतियाँ प्रकाशित हुई हैं जिनके लेखक आदिवासी और गैर-आदिवासी दोनों हैं। संभवतः आदिवासी लेखन में दलित लेखन की तरह स्वानुभूति और सहानुभूति का संघर्ष और घृणा नहीं है। जातिगत चेतना का वैसा विस्फोट नहीं दिखायी देता है। आदिवासी समाज के लेखकों के मन में असंतोष, विद्वेष और प्रतिरोध का भाव वर्णवादी व्यवस्था के प्रति कभी नहीं रहा है। दरअसल आदिवासियों के साथ सवर्णवादी मानसिकता और शोषण का ब्राह्मणवादी सिलसिला कभी इतिहास के पृष्ठों में मौजूद नहीं है। आदिवासी समाज का संघर्ष तद्व्युत्पन्न व्यवस्था, राजसत्ता, अंग्रेजी शासन और भारतीय शासन-व्यवस्था में शोषणवादी शक्तियों से बराबर बना हुआ था। नक्सलवाद इसी अन्याय व शोषण के खिलाफ प्रतिरोध की अभिव्यक्ति है जो अब हिंसा के रास्ते पर चलकर दिशाहीन हो चुका है। आदिवासी समाज के जीवन में गरीबी, स्त्री शोषण, दासत्व, अत्याचार का बोलबाला इस नयी सदी के आते-आते बहुत कम हो गया है। उनके जीवन में अभूतपूर्व परिवर्तन का मार्ग शिक्षा के रास्ते प्रशस्त हुआ है और उनमें जागरूकता आयी है। देश-दुनिया को देखने-समझने और चुनौतियों से जूझने की शक्ति और दिशा मिली है। उनमें प्रतिरोध का माद्दा बढ़ा है और समय के बदलते रंग-ढंग में उनका जीवन स्तर काफी बदल गया है। समाज की मुख्यधारा में शामिल होकर उन्होंने अपनी सार्थक और ताकतवर उपस्थिति दर्ज करायी है।

किंतु, आज से आठ दशक पूर्व यानी बीसवीं सदी के चौथे-पाँचवें दशक में आदिवासी समाज की स्थिति चिंतनीय थी। शोषण का दुष्चक्र घनीभूत था। उनकी स्त्रियों का शारीरिक शोषण आम बात थी। आर्थिक विपन्नता और सामाजिक अलगाव उनके संघर्षमय जीवन का प्रमुख कारण था। उसी दौर में हिंदी कथाकार हरिहर वैष्णव ने आदिवासियों का सुख-दुःख, संघर्ष, शोषण का कच्चा चिट्ठा अपनी पंद्रह कहानियों में खोल दिया है। 1997 में प्रकाशित 'मोहभंग' कथा-संग्रह की 15 कहानियाँ 46 वर्ष पूर्व